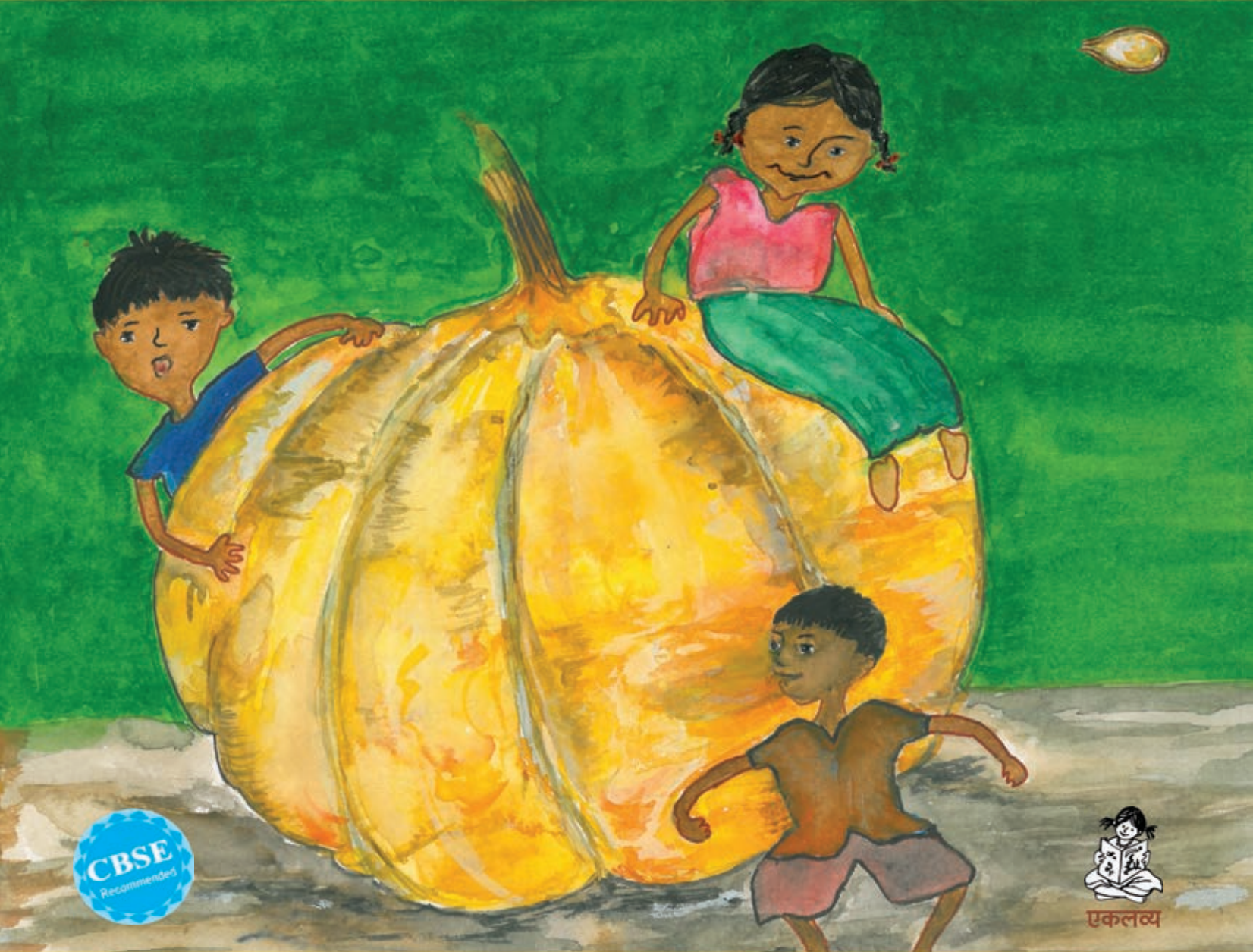


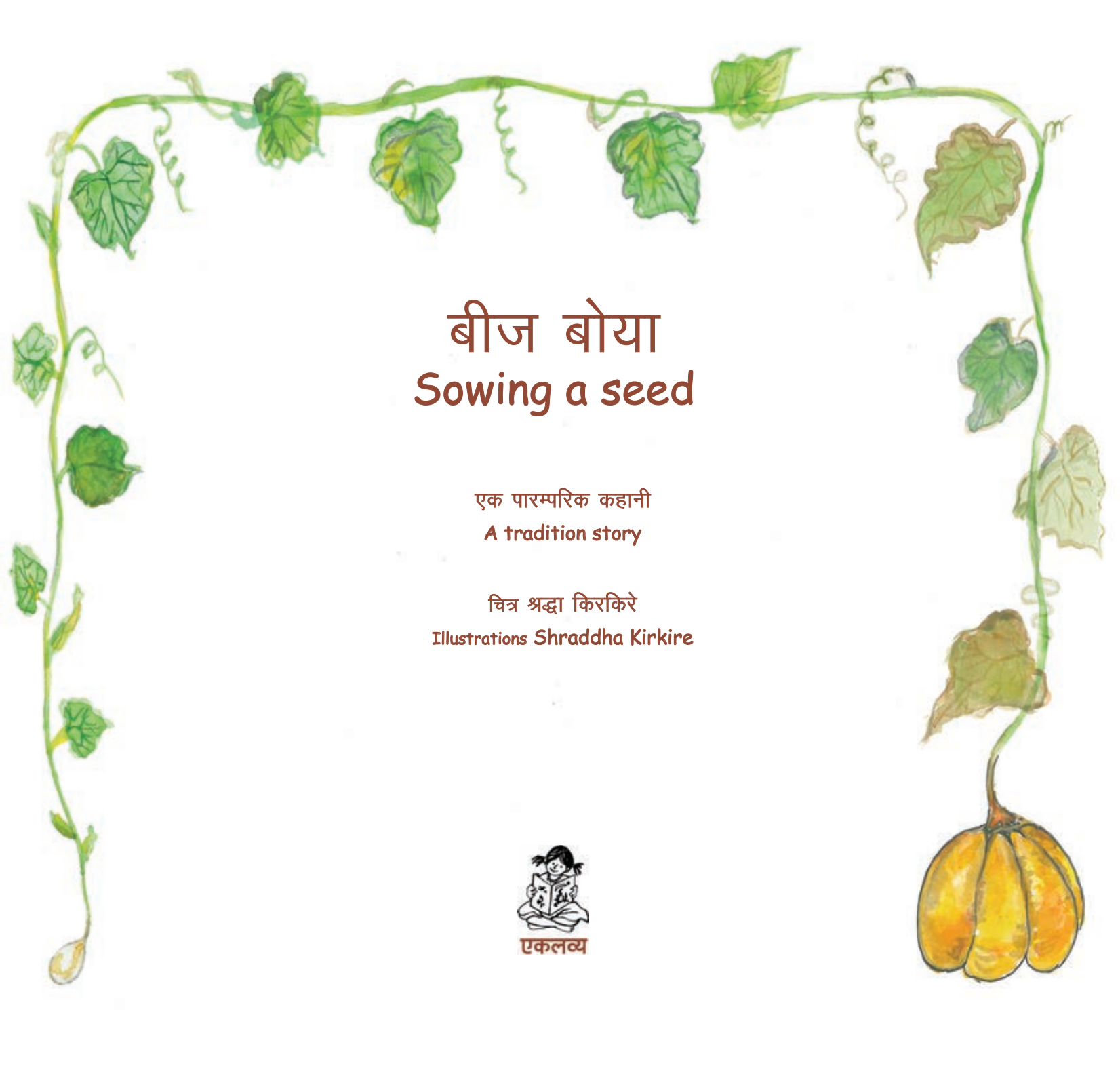
बीज बोया

Sowing a seed



एक पारम्परिक कहानी

A tradition story



बीज बोया Sowing a seed

एक पारम्परिक कहानी
A tradition story

चित्र श्रद्धा किरकिरे
Illustrations Shradha Kirkire



एकलक्ष्य

बीज बोया

BEEJ BOYA

एक पारम्परिक कहानी

मराठी से हिन्दी अनुवाद: माधव केलकर

हिन्दी से अँग्रेज़ी अनुवाद: टुलटुल बिस्वास

चित्र: श्रद्धा किरकिरे

सहयोग: नीलेश निमकर



SOWING A SEED

A traditional story

Hindi translation: Madhav Kelkar

English translation: Tultul Biswas

Illustrations: Shradha Kirkire

Support: Nilesh Nimkar

© QUEST व एकलव्य

इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य व QUEST को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य व QUEST को लिखें।



यह किताब क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (Quest), पुणे द्वारा विकसित की गई है। (www.quest.org.in)
पराग इनिशिएटिव, रतन टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित।

पहला संस्करण: जुलाई 2011 (5000 प्रतियाँ)

पहला पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2014 (3000 प्रतियाँ)

दूसरा पुनर्मुद्रण: अगस्त 2015 (3000 प्रतियाँ)

तीसरा पुनर्मुद्रण: मार्च 2016 (5000 प्रतियाँ)

चौथा पुनर्मुद्रण: अगस्त 2018 (3000 प्रतियाँ)

पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: अप्रैल 2019 (3000 प्रतियाँ)

छठवाँ पुनर्मुद्रण: जनवरी 2021 (3000 प्रतियाँ)

सातवाँ पुनर्मुद्रण: जून 2021 (3000 प्रतियाँ)

आठवाँ पुनर्मुद्रण: मई 2023 (5000 प्रतियाँ)

कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-81300-00-8

मूल्य: ₹ 50.00



यह किताब मराठी-अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है (ISBN: 978-93-81300-01-5 / Price: ₹ 50.00)।

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72

www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल; फोन: +91 755 258 7551

हमने एक बीज बोया।

We sowed a seed.



उसे पानी से सींचा।
And watered it.



एक अंकुर आया।

It sprouted.



दो पत्तियाँ आईं।

Two leaves appeared.

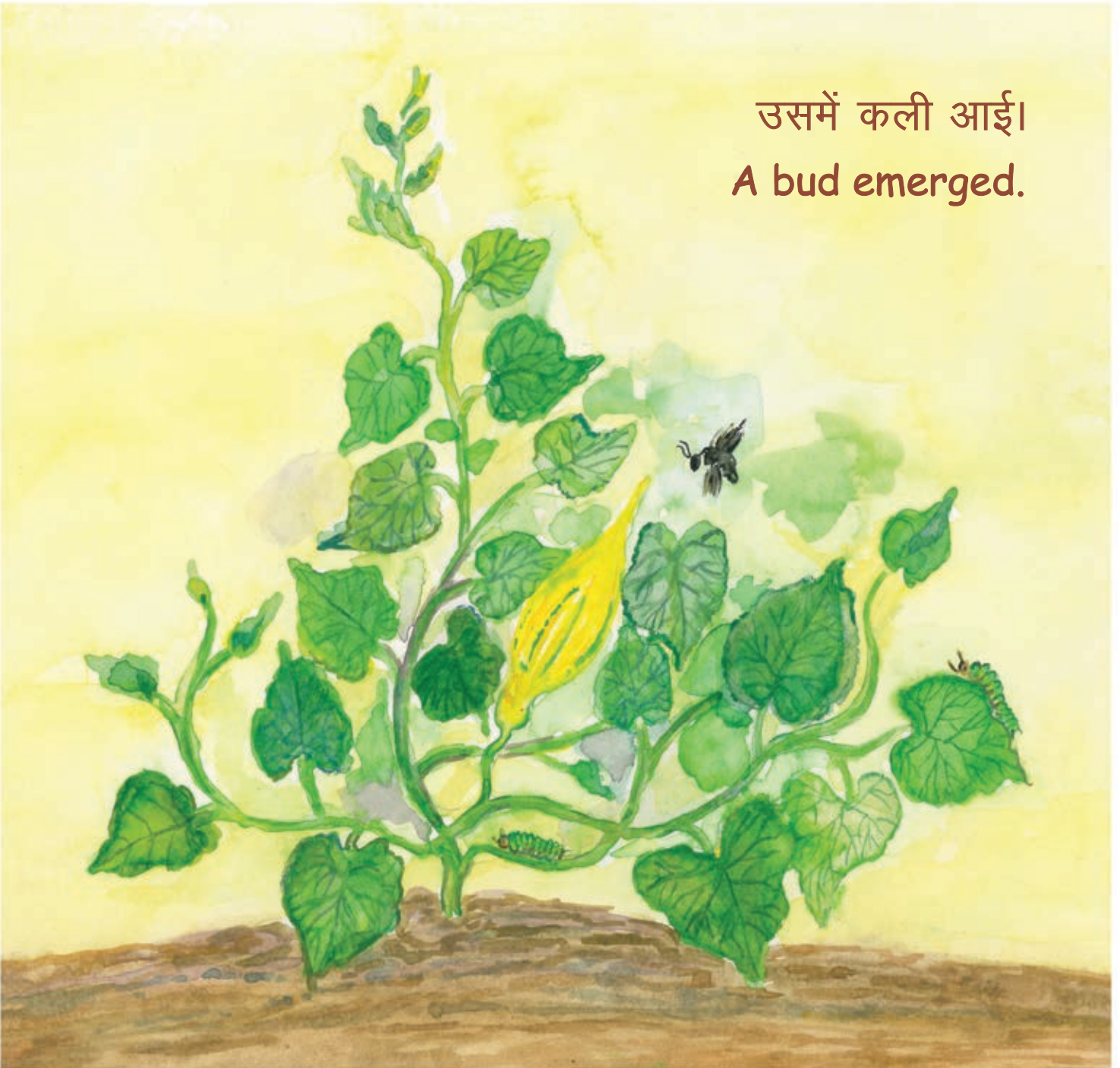


बेल बढ़ने लगी।

The creeper grew.



उसमें कली आई।
A bud emerged.



एक फूल खिला।

A flower bloomed.



एक फल आया।

A fruit appeared.



वह इत्ता बड़ा हुआ।

It grew this big.



इत्ता... बड़ा।
This... big.



इत्ता... बड़ा।

This... big.



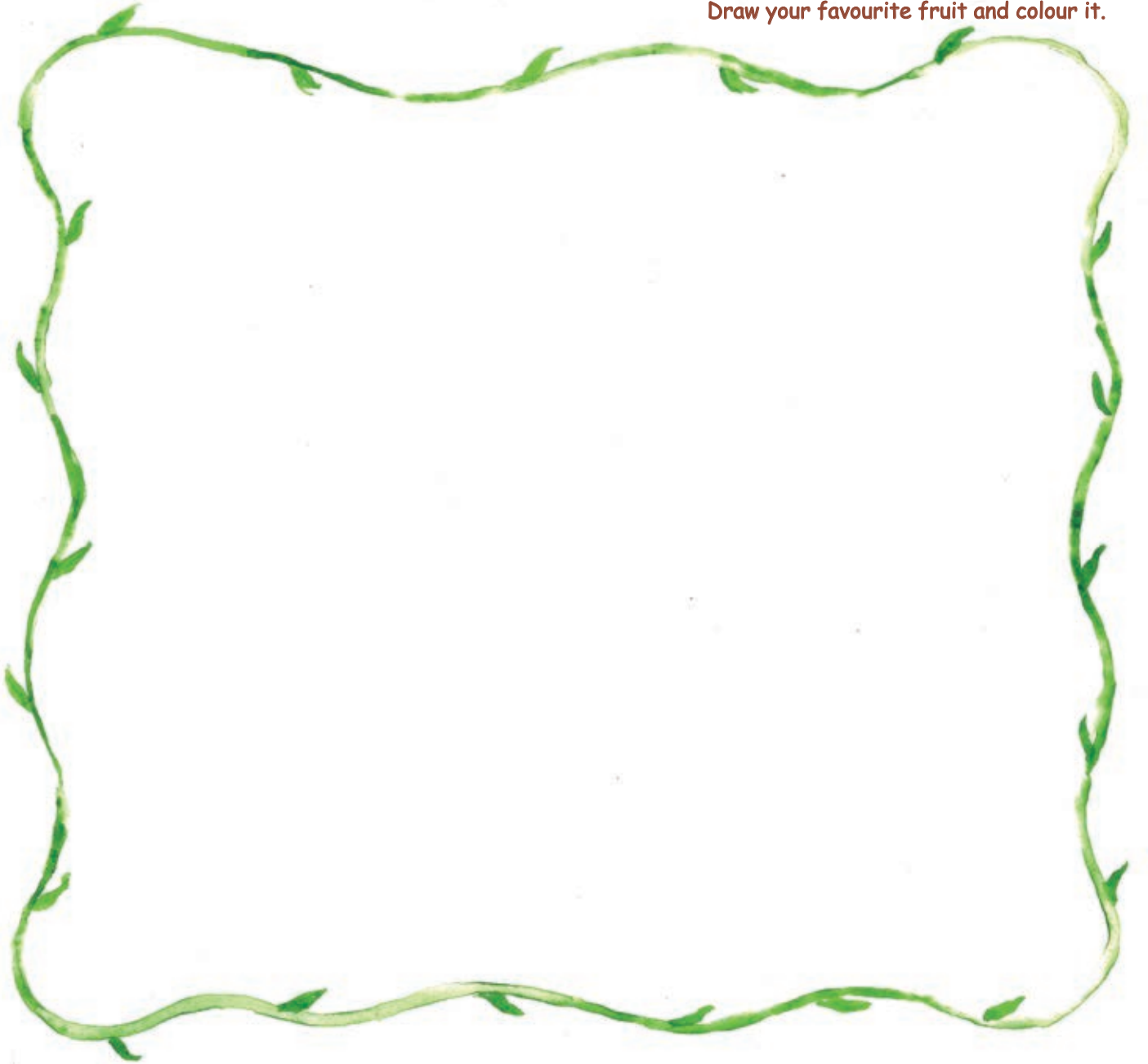
और इत्ता..... बड़ा!



And this..... big!

तुम्हें कौन-सा फल अच्छा लगता है?
यहाँ पर उसका चित्र बनाओ और उसमें रंग भरओ।

Draw your favourite fruit and colour it.





इस कहानी के सभी चित्र मैंने तुम्हारे लिए बनाए हैं।
क्या तुम्हें चित्रकारी करना अच्छा लगता है?
मुझे तो बड़ा मज़ा आता है। मैं अक्सर चित्र बनाती हूँ।
कभी टेढ़े-मेढ़े तो कभी सीधे-सादे, कभी भले-बुरे तो कभी एकदम मस्त चित्र...!

चित्र बनाना और उन्हें रँगना मेरा मनपसन्द काम है।
इसीलिए तो बच्चों की कहानियों में चित्र बिखेरने में मुझे बड़ा मज़ा आता है।
जब-जब मैं चित्र बनाती हूँ तब-तब मुझे उन सबकी याद आती है जिन्होंने मुझे चित्र देखना,
उन्हें सराहना और चित्र बनाना सिखाया है।

इसके अलावा, मुझे गीत-संगीत बहुत प्यारा लगता है।
संगीत की दुनिया भी बड़ी अनोखी दुनिया है...

श्रद्धा किरकिरे



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा में सुधार व नवाचार के लिए पिछले
अनेक वर्षों से कार्यरत है। इसके तीन प्रमुख आयाम हैं - शैक्षिक शोध व सामग्री
निर्माण, अनुभवों व संसाधनों की साझेदारी तथा शैक्षिक सामग्री का प्रकाशन
व वितरण।

हमारे प्रकाशनों की एक व्यापक शृंखला है जिसमें बाल पत्रिका *चकमक*, विज्ञान
व टेक्नॉलॉजी फीचर्स *स्रोत* व शैक्षणिक *संदर्भ* के साथ-साथ बाल साहित्य,
गतिविधि पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकें और शिक्षा, विकास व सामाजिक सरोकार के
मुद्दों पर किताबें, पुस्तिकाएँ व अन्य सामग्री शामिल हैं।

यह किताब इसी शृंखला की कड़ी है। इसकी सामग्री व सज्जा पर आपके
सुझावों का स्वागत है। हमारे आगामी प्रकाशनों को अधिक आकर्षक, रुचिकर
व उपयोगी बनाने में आपके विचारों से हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in

एकलव्य फाउंडेशन जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)



क्वेस्ट (क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट),
हरेक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके
इसके लिए काम करने वाली स्वयंसेवी
संस्था है। क्वेस्ट महाराष्ट्र के ठाणे और
नंदुरबार ज़िले के आदिवासी बच्चों के साथ
पिछले चार साल से काम कर रही है। बच्चों
को पसन्द आए ऐसी किताबें तैयार करने
का काम क्वेस्ट ने अपने हाथों में लिया है।
उन किताबों में से एक है यह किताब।

बीज बोया

महाराष्ट्र की शिक्षा व बाल साहित्य की दुनिया की जानी-पहचानी हस्ती ताराबाई मोडक कहती हैं, “कि बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जिसका बच्चे आनन्द ले सकें। इसके लिए बाल साहित्य के रचनाकारों को तीन बातों पर गौर करना चाहिए – विषय, भाषा और शैली। विषयवस्तु का चयन बच्चों की दृष्टि से किया जाना चाहिए। बच्चों की जिज्ञासा के विषय, उन्हें खुशी देने वाले विषय, उनके मजे के विषय खोज निकालने चाहिए और उसमें विविधता लाई जानी चाहिए।”

कुछ ऐसी ही कोशिश हमने इस किताब में की है। एक छोटे से बीज से लेकर बेल बनने और फल लगने तक की सारी प्रक्रिया बच्चों में कौतूहल जगाती है। यही तो इस किताब का विषय है।



मूल्य: ₹ 50.00



क्यालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट द्वारा निर्मित